एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-53

****

Scanned by CamScanner

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, प्रथम वर्ष

****

प्रथम पत्र

****

तुलसीदास

****

'रामचरितमानस'- अयोध्या काण्ड

****

Scanned by CamScanner

[अयोध्या काण्ड मूल-पाठ व्याख्या/ विश्लेषण (शेष भाग-52 से आगे....)]

दो० - सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ।
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ॥ 76॥

सीता सहित दोनों सुंदर पुत्रों को देख-देखकर राजा अकुलाते हैं और स्नेह वश बारंबार उन्हें हृदय से लगा लेते हैं॥ 76॥

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू। सोक जनित उर दारुन दाहू॥
नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा॥

राजा व्याकुल हैं, बोल नहीं सकते। हृदय में शोक से उत्पन्न हुआ भयानक संताप है। तब रघुकुल के वीर राम ने अत्यंत प्रेम से चरणों में सिर नवाकर उठकर विदा माँगी -

Scanned by CamScanner

पितु असीस आयसु मोहि दीजै। हरष समय बिसमउ कत कीजै॥

तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू। जसु जग जाइ होइ अपबादू॥

हे पिता! मुझे आशीर्वाद और आज्ञा दीजिए। हर्ष के समय आप शोक क्यों कर रहे हैं? हे तात! प्रिय के प्रेमवश प्रमाद (कर्तव्यकर्म में त्रुटि) करने से जगत में यश जाता रहेगा और निंदा होगी।

सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ॥

सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं। रामु चराचर नायक अहहीं॥

यह सुनकर स्नेहवश राजा ने उठकर रघुनाथ की बाँह पकड़कर उन्हें बैठा लिया और कहा - हे तात! सुनो, तुम्हारे लिए मुनि लोग कहते हैं कि राम चराचर के स्वामी हैं।

सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी॥

Scanned by CamScanner

करइ जो करम पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई॥

शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर हृदय में विचारकर फल देता है। जो कर्म करता है वही फल पाता है। ऐसी वेद की नीति है, यह सब कोई कहते हैं।

दो० - औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु॥ 77॥

(किंतु इस अवसर पर तो इसके विपरीत हो रहा है,) अपराध तो कोई और ही करे और उसके फल का भोग कोई और ही पावे। भगवान की लीला बड़ी ही विचित्र है, उसे जानने योग्य जगत में कौन है?॥ 77॥

रायँ राम राखन हित लागी। बहुत उपाय किए छलु त्यागी॥
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने॥

Scanned by CamScanner

राजा ने इस प्रकार राम को रखने के लिए छल छोड़कर बहुत-से उपाय किए, पर जब उन्होंने धर्मधुरंधर, धीर और बुद्धिमान राम का रुख देख लिया और वे रहते हुए न जान पड़े,

तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही। अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही॥

कहि बन के दुख दुसह सुनाए। सासु ससुर पितु सुख समुझाए॥

तब राजा ने सीता को हृदय से लगा लिया और बड़े प्रेम से बहुत प्रकार की शिक्षा दी। वन के दुःसह दुःख कहकर सुनाए। फिर सास, ससुर तथा पिता के (पास रहने के) सुखों को समझाया।

सिय मनु राम चरन अनुरागा। घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा॥

औरउ सबहिं सीय समुझाई। कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई॥

Scanned by CamScanner

परंतु सीता का मन राम के चरणों में अनुरक्त था। इसलिए उन्हें घर अच्छा नहीं लगा और न वन भयानक लगा। फिर और सब लोगों ने भी वन में विपत्तियों की अधिकता बता-बताकर सीता को समझाया।

सचिव नारि गुर नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी॥
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू॥

मंत्री सुमंत्र की पत्नी और गुरु वशिष्ठ की स्त्री अरुंधती तथा और भी चतुर स्त्रियाँ स्नेह के साथ कोमल वाणी से कहती हैं कि तुमको तो (राजा ने) वनवास दिया नहीं है। इसलिए जो ससुर, गुरु और सास कहें, तुम तो वही करो।

(शेष अध्ययन व विश्लेषण भाग-54 में.....)

Scanned by CamScanner